# د قرآن نور

## اووه لسم جز – درس168 : سورة الحج – ایات 1-22

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يَـٰٓأَيُّهَا | ٱلنَّاسُ | ٱتَّقُوا۟ | رَبَّكُمْ | إِنَّ | زَلْزَلَةَ | ٱلسَّاعَةِ | شَىْءٌ | عَظِيمٌ ﴿١﴾ |
| | | | | | | | | |
| اے | خلقو! | ویریږئ | د خپل رب نه | بے شکه | زلزله | د قیامت | شے دے | ډیر لوئ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يَوْمَ | تَرَوْنَهَا | تَذْهَلُ | كُلُّ | مُرْضِعَةٍ | عَمَّآ | أَرْضَعَتْ |
| | | | | | | |
| په کومه ورځ چه | تاسو اووینئ هغه | غافل به شی | هره | پۍ ورکولو والا | د هغې نه چه | هغې به پۍ ورکول |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَتَضَعُ | كُلُّ | ذَاتِ حَمْلٍ | حَمْلَهَا | وَتَرَى | ٱلنَّاسَ | سُكَـٰرَىٰ |
| | | | | | | |
| او اوغورزوی به | هره | حمل والا | حمل خپل | او ته به اووینې | خلق | په نشه کښې |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَا | هُم | بِسُكَـٰرَىٰ | وَلَـٰكِنَّ | عَذَابَ | ٱللَّهِ | شَدِيدٌ ﴿٢﴾ |
| | | | | | | |
| حالانکه نه ( به وی ) | هغوی | په نشه کښې | او لیکن | عذاب | د الله تعالی | ډیر سخت دے |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمِنَ ٱلنَّاسِ | مَن | يُجَـٰدِلُ | فِى ٱللَّهِ | بِغَيْرِ | عِلْمٍ | وَيَتَّبِعُ |
| | | | | | | |
| او په تاسو کښې | هغه دے چه | جګړه کوی | د الله په باره کښې | بغیر | د علم نه | او هغه اتباع کوی |

| | | |
|---|---|---|
| كُلَّ | شَيْطَـٰنٍ | مَّرِيدٍ ﴿٣﴾ |
| | | |
| د هر | شیطان | سرکش |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| كُتِبَ | عَلَيْهِ | أَنَّهُۥ | مَن | تَوَلَّاهُ |
| | | | | |
| لیکلې شوې دے | په هغه باندې | چه بے شکه هغه | چه څوک هم | دوست جوړوی هغه |

# د قرآن نور

## اووه لسم جز – درس168 : سورة الحج – ايات 1-22

| فَأَنَّهُ | يُضِلُّهُ | وَيَهْدِيهِ | إِلَى عَذَابِ | السَّعِيرِ﴿٤﴾ |
| --- | --- | --- | --- | --- |
| | | | | |
| نو بے شکه هغه | هغه به گمراه کړی هغه | او هغه به رهنمائی کوی د هغه | طرفته د عذاب | د دوزخ |

| يَا أَيُّهَا | النَّاسُ | إِنْ | كُنْتُمْ | فِي رَيْبٍ | مِنَ الْبَعْثِ | فَإِنَّا |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| | | | | | | |
| اے | خلقو! | که چرے | یئ تاسو | په څه شک کښ | د دوباره راپاڅیدونه | نو بے شکه مونږ |

| خَلَقْنَاكُمْ | مِنْ تُرَابٍ | ثُمَّ | مِنْ نُطْفَةٍ | ثُمَّ | مِنْ عَلَقَةٍ | ثُمَّ |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| | | | | | | |
| پیدا کړی یئ مونږ تاسو | د خاورې نه | بیا | د نطفې نه | بیا | د جمع شوی وینې نه | بیا |

| مِنْ مُضْغَةٍ | مُخَلَّقَةٍ | وَغَيْرِ | مُخَلَّقَةٍ | لِنُبَيِّنَ | لَكُمْ ۚ |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| | | | | | |
| د غوښې د بوټۍ نه | شکل والا | او بغیر | شکل والا/ مکمل | څکه چه مونږ واضحه کړو | ستاسو دپاره |

| وَنُقِرُّ | فِي الْأَرْحَامِ | مَا | نَشَاءُ | إِلَى أَجَلٍ مُسَمًّى | ثُمَّ |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| | | | | | |
| او مونږ قرار ورکوو | په رحمونو کښ | څه چه | مونږ غواړو | د یو مقرر وخته پورے | بیا |

| نُخْرِجُكُمْ | طِفْلًا | ثُمَّ | لِتَبْلُغُوا | أَشُدَّكُمْ ۖ | وَمِنْكُمْ |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| | | | | | |
| مونږ راواباسو تاسو | بچے | بیا | څکه چه تاسو اورسئ | خپلې ځوانئ ته | او په تاسو کښ |

| مَنْ | يُتَوَفَّى | وَمِنْكُمْ | مَنْ | يُرَدُّ | إِلَى | أَرْذَلِ |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| | | | | | | |
| هغه دے چه | وفات کړے شی | او په تاسو کښ | هغه دے چه | واپس کړے شی | طرفته | د ناکاره |

| الْعُمُرِ | لِكَيْلَا | يَعْلَمَ | مِنْ بَعْدِ | عِلْمٍ | شَيْئًا ۚ | وَتَرَى | الْأَرْضَ |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| | | | | | | | |
| عمر | څکه چه نه | هغه پوهه پاتے شی | پس | د پوهیدو نه | هیڅ هم | او تاسو گورئ | زمکے ته |

# د قرآن نور

## اووه لسم جز – درس168 : سورة الحج – ايات 1-22

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| هَامِدَةً | فَإِذَا | أَنْزَلْنَا | عَلَيْهَا | الْمَاءَ | اهْتَزَّتْ | وَرَبَتْ |
| | | | | | | |
| اوچه | چه کله | نازلوؤ مونږ | په هغې باندِ | اوبهٔ | هغه تر اوتازه شی | او هغه زیات شی |

| | | |
|---|---|---|
| وَأَنْبَتَتْ | مِنْ كُلِّ زَوْجٍ | بَهِيجٍ ﴿٥﴾ |
| | | |
| او هغه راټوکوی | هر قسمه | رونق والا ( بوټی ) |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ذَٰلِكَ | بِأَنَّ | اللَّهَ | هُوَ | الْحَقُّ | وَأَنَّهُ | يُحْيِي |
| | | | | | | |
| ادا | په وجه د هغې چه | الله تعالی | هم هغه | حق دے | او بے شکه هغه | هغه ژوندی کوی |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الْمَوْتَىٰ | وَأَنَّهُ | عَلَىٰ | كُلِّ | شَيْءٍ | قَدِيرٌ ﴿٦﴾ |
| | | | | | |
| مړی | او بے شکه هغه | په | هر | څیز | ښه قدرت لرلو والا دے |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَأَنَّ | السَّاعَةَ | آتِيَةٌ | لَا رَيْبَ | فِيهَا | وَأَنَّ | اللَّهَ |
| | | | | | | |
| او بے شکه | قیامت | راتلو والا دے | نشته څه شک | په دے کښ | او بے شکه | الله تعالی |

| | | |
|---|---|---|
| يَبْعَثُ | مَنْ | فِي الْقُبُورِ ﴿٧﴾ |
| | | |
| دوباره به راواچتوی | هغوئ چه | په قبرونو کښ دی |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمِنَ النَّاسِ | مَنْ | يُجَادِلُ | فِي اللَّهِ | بِغَيْرِ | عِلْمٍ | وَلَا |
| | | | | | | |
| او په خلقو کښ | هغه دے چه | جګړه کوی | د الله په باره کښ | بغیر | د علم نه | او بغیر |

| | | | |
|---|---|---|---|
| هُدًى | وَلَا | كِتَابٍ | مُنِيرٍ ﴿٨﴾ |
| | | | |
| د هدایت نه | او بغیر | د څه کتاب | روښانه نه |

# د قرآن نور

## اووه لسم جز – درس168 : سورة الحج – ايات 1-22

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ثَانِيَ | عِطْفِهِ | لِيُضِلَّ | عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ | لَهُ | فِي الدُّنْيَا |
| | | | | | |
| تاوهي | اوږه خپله | ځکه چه هغه ګمراه کړی | د الله د لارے نه | د هغه دپاره ده | په دنيا کښ |
| خِزْيٌ | وَنُذِيقُهُ | يَوْمَ | الْقِيَامَةِ | عَذَابَ | الْحَرِيقِ ﴿٩﴾ |
| | | | | | |
| رسوائی | او مونږ به اوڅکو په هغه | په ورځ | د قيامت | عذاب | د اور |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ذَٰلِكَ | بِمَا | قَدَّمَتْ | يَدَاكَ | وَأَنَّ | اللَّهَ |
| | | | | | |
| دا | په وجه د هغې چه | مخکښ اوليږل | ستاسو دواړو لاسونو | او بے شکه | الله تعالی |
| لَيْسَ | بِظَلَّامٍ | لِلْعَبِيدِ ﴿١٠﴾ | | | |
| | | | | | |
| نه دے | ظلم کولو والا | په بنديانو باندِ | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمِنَ النَّاسِ | مَنْ | يَعْبُدُ | اللَّهَ | عَلَىٰ حَرْفٍ | فَإِنْ | أَصَابَهُ |
| | | | | | | |
| او په خلقو کښ | هغه دے چه | عبادت کوی | د الله تعالی | په کناره باندِ | بيا که چرے | اورسی هغه ته |
| خَيْرٌ | اطْمَأَنَّ | بِهِ | وَإِنْ | أَصَابَتْهُ | فِتْنَةٌ | انْقَلَبَ |
| | | | | | | |
| خير | نو هغه مطمئن شی | په هغې | او که چرے | اورسی هغه ته | څه ازمائش | نو هغه واپس شی |
| عَلَىٰ وَجْهِهِ | خَسِرَ | الدُّنْيَا | وَالْآخِرَةَ | ذَٰلِكَ | هُوَ | الْخُسْرَانُ |
| | | | | | | |
| په خپل مخ باندِ | هغه نقصان اوچت کړو | د دنيا | او د آخرت | دا دے | هغه | لوئ نقصان |
| الْمُبِينُ ﴿١١﴾ | | | | | | |
| | | | | | | |
| ښکاره | | | | | | |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يَدْعُو | مِنْ دُونِ | اللَّهِ | مَا | لَا يَضُرُّهُ | وَمَا |
| | | | | | |
| هغه بلی | سوائے | د الله نه | هغه چه | نه نقصان ورکوی هغه له | او څه چه |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| لَا يَنْفَعُهُ | ذَٰلِكَ | هُوَ | الضَّلَالُ | الْبَعِيدُ ﴿١٢﴾ |
| | | | | |
| نه ورکوی فائده هغه له | دا ده | هغه | ګمراهی | د لرے |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يَدْعُو | لَمَنْ | ضَرُّهُ | أَقْرَبُ | مِنْ نَفْعِهِ | لَبِئْسَ |
| | | | | | |
| هغه بلی | یقیناً هغه | نقصان د هغه | ډیر نزدے دے | د هغه د فائدے نه | البته خومره بد دے |

| | | |
|---|---|---|
| الْمَوْلَىٰ | وَلَبِئْسَ | الْعَشِيرُ ﴿١٣﴾ |
| | | |
| دوست | او خومره بد دے | ملګرے |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| إِنَّ | اللَّهَ | يُدْخِلُ | الَّذِينَ | آمَنُوا | وَعَمِلُوا |
| | | | | | |
| بے شکه | الله تعالی | هغه به داخل کړی | هغوئ چه | ایمان ئ راوړے دے | او هغوئ عملونه کړی دی |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الصَّالِحَاتِ | جَنَّاتٍ | تَجْرِي | مِنْ تَحْتِهَا | الْأَنْهَارُ | إِنَّ | اللَّهَ |
| | | | | | | |
| نیک | په باغونو کښ | بهیږی | د هغې د لاندِ | نهرونه | بے شکه | الله تعالی |

| | | |
|---|---|---|
| يَفْعَلُ | مَا | يُرِيدُ ﴿١٤﴾ |
| | | |
| کوی | څه چه | هغه غواړی |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مَنْ | كَانَ | يَظُنُّ | أَنْ | لَنْ | يَنْصُرَهُ | اللَّهُ | فِي الدُّنْيَا |
| | | | | | | | |
| څوک چه | کوی | ګمان | دا چه | هیڅ کله به نه | مدد کوی د هغه | الله تعالی | په دنیا کښ |

# د قرآن نور

## اووه لسم جز – درس168 : سورة الحج – ایات 1-22

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| وَالْآخِرَةِ | فَلْيَمْدُدْ | بِسَبَبٍ | إِلَى السَّمَاءِ | ثُمَّ لْيَقْطَعْ |
| | | | | |
| او آخرت کښې | پس پکار ده چه هغه اوږده کړی | یوه رسۍ | طرفته د آسمان | بیا پکار ده چه هغه پریکړی |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| فَلْيَنْظُرْ | هَلْ | يُذْهِبَنَّ | كَيْدُهُ | مَا | يَغِيظُ﴿١٥﴾ |
| | | | | | |
| پس پکار ده چه هغه اوګوری | آیا | واقعی اوړی | تدبیر د هغه | هغه ( شے ) | چه غصّه راولی |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَكَذَٰلِكَ | أَنْزَلْنَاهُ | آيَاتٍ | بَيِّنَاتٍ | وَأَنَّ | اللَّهَ | يَهْدِي |
| | | | | | | |
| او دغه شان | نازل کړی دی مونږ | ایتونه | واضحه | او بے شکه | الله تعالی | هغه هدایت ورکوی |

| | |
|---|---|
| مَنْ | يُرِيدُ﴿١٦﴾ |
| | |
| چاله چه | هغه اوغواړی |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| إِنَّ | الَّذِينَ | آمَنُوا | وَالَّذِينَ | هَادُوا | وَالصَّابِئِينَ | وَالنَّصَارَىٰ |
| | | | | | | |
| بے شکه | هغوئ چه | ایمان ئې راوړو | او هغوئ چه | یهودیان شول | او صابی | او نصری |
| وَالْمَجُوسَ | وَالَّذِينَ | أَشْرَكُوا | إِنَّ | اللَّهَ | يَفْصِلُ | بَيْنَهُمْ |
| | | | | | | |
| او مجوسی | او هغوئ چا چه | شرک اوکړو | بے شکه | الله به | فیصله کوی | د هغوئ په مینځ کښې |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يَوْمَ | الْقِيَامَةِ | إِنَّ | اللَّهَ | عَلَىٰ | كُلِّ | شَيْءٍ | شَهِيدٌ﴿١٧﴾ |
| | | | | | | | |
| په ورځ | د قیامت | بے شکه | الله تعالی | په | هر | څیز | ښه ګواه دے |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| أَلَمْ | تَرَ | أَنَّ | اللَّهَ | يَسْجُدُ | لَهُ | مَنْ |
| | | | | | | |
| آیا نه دی | تا کتلی | چه بے شکه | الله تعالی | سجده کوی | هم هغه ته | څوک چه |

# د قرآن نور

## اووه لسم جز – درس168 : سورة الحج – ايات 1-22

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِي السَّمَاوَاتِ | وَمَنْ | فِي الْأَرْضِ | وَالشَّمْسُ | وَالْقَمَرُ | وَالنُّجُومُ | وَالْجِبَالُ |
| | | | | | | |
| په آسمانونو کښې دی | او څوک چه | په زمکه کښې دی | او نمر/ لمر | او سپوږمۍ | او ستوری | او غرونه |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَالشَّجَرُ | وَالدَّوَابُّ | وَكَثِيرٌ | مِنَ النَّاسِ | وَكَثِيرٌ | حَقَّ |
| | | | | | |
| او اونې | او ځاروی | او ډیر زیات | په انسانانو کښې | او ډیر زیات ( داسې دی ) | چه حق ثابت شوې دې |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلَيْهِ | الْعَذَابُ | وَمَنْ | يُهِنِ | اللَّهُ | فَمَا | لَهُ |
| | | | | | | |
| په هغوئ باندې | د عذاب | او چه څوک | رسوا کړی | الله تعالی | نو نشته | د هغه دپاره |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ مُكْرِمٍ | إِنَّ | اللَّهَ | يَفْعَلُ | مَا | يَشَاءُ ۩ ﴿١٨﴾ |
| | | | | | |
| څوک عزت ورکولو والا | بې شکه | الله تعالی | هغه کوی | څه چه | هغه غواړی |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| هَـٰذَانِ | خَصْمَانِ | اخْتَصَمُوا | فِي رَبِّهِمْ | فَالَّذِينَ |
| | | | | |
| دا دوه | جګړه کولو والا دی | چا چه جګړه اوکړه | د خپل رب په باره کښې | نو هغه خلق چا چه |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| كَفَرُوا | قُطِّعَتْ | لَهُمْ | ثِيَابٌ | مِنْ نَارٍ |
| | | | | |
| کفر اوکړو | کټ شوی دی/ پریکړې شوی دی | د هغوئ دپاره | جامې | د اور نه |

| | | | |
|---|---|---|---|
| يُصَبُّ | مِنْ فَوْقِ | رُءُوسِهِمُ | الْحَمِيمُ ﴿١٩﴾ |
| | | | |
| اچولې به شی | د پاسه نه | د هغوئ په سرونو | ایشیدلی اوبهٔ |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| يُصْهَرُ | بِهِ | مَا | فِي بُطُونِهِمْ | وَالْجُلُودُ ﴿٢٠﴾ |
| | | | | |
| ولی به شی | سره د دې | څه چه | د هغوئ په خیټو کښې دی | او څرمنې هم |

# د قرآن نور

## اووه لسم جز – درس168 : سورة الحج – ایات 1-22

| | | |
|---|---|---|
| وَلَهُمْ | مَقَامِعُ | مِنْ حَدِيدٍ﴿٢١﴾ |
| | | |
| او د هغوئ دپاره به | ګرزونه وی | د اوسپنے |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| كُلَّمَا | أَرَادُوا | أَنْ | يَخْرُجُوا | مِنْهَا | مِنْ غَمٍّ | أُعِيدُوا |
| | | | | | | |
| چه کله هم | هغوئ اراده اوکړی | چه | هغوئ اوځی | د هغے نه | د غم نه | هغوئ به واپس شی |
| فِيهَا | وَذُوقُوا | | عَذَابَ | | الْحَرِيقِ﴿٢٢﴾ | |
| | | | | | | |
| هغے ته | او اوڅکئ | | عذاب | | د اور | |

ArRahman